धर्म-निरपेक्ष राज्यकी व्याख्या

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाओी देसाओी अंक १३

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २६ मओी, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

सब धर्मोंके लिअे समान आदर*

खास कर हमारे देशमें अिसकी बड़ी आवश्यकता है कि हम यह महसूस करें कि प्रत्येक धर्म और संप्रदायके प्रति आदर और समानताका भाव रखना और तदनुकूल आचरण करना ही हमारे लिअे अुत्तम रास्ता है। क्योंकि सम्पूर्ण देशका और हममेंसे हर-अेकका कल्याण अिसीमें है। अिसी निष्ठा और विश्वासके कारण हमारे संघ-राज्यने धर्म-निरपेक्षताकी नीति अपनायी है, और अपनी प्रजाको यह भरोसा दिया है कि किसी व्यक्ति या सम्प्रदायके खिलाफ धर्मके आधार पर कोओी भेदभाव नहीं किया जायगा, और हरअेकको अुसके पालनकी समान सुविधायें दी जायंगी। मैं अिस आदर्शके अनुसार सब धर्मोंके प्रति प्रेम और आदर रखता हूं।

यद्यपि मैं खुद अपने विश्वास और नित्यचर्याकी दृष्टिसे सनातनी हिन्दू हूं, और यद्यपि मैं अपना पूजा-पाठ सनातनियोंकी विधिसे करता हूं, लेकिन मैं यह विश्वास करता हूं कि हरअेक धर्मपरायण व्यक्ति अपने-अपने धर्मको विधिसे भगवान्‌की पूजा करते हुअे अुस तक पहुंच सकता है। अिसलिअे मुझे न सिर्फ सब धर्मोंके लिअे आदर है, बल्कि जब कभी मुझे मौका मिलता है, मैं अुन सब धर्म-स्थानोंमें जाता भी हूं और अपना आदर प्रगट करता हूं। जब भी अवसर आता है, मैं दरगाह और मस्जिद, गिरजा और गुरुद्वारा आदिमें वही आदरका भाव लेकर जाता हूं जैसे कि अपने धर्म-मंदिरोंमें।

(अंग्रेजीसे) **राजेन्द्रप्रसाद**

"व्यवहार शुद्धि मंडल"

निवेदन

हमें जब स्वराज्य मिला तब अैसा लगता था कि हम अपनी स्थितिकी सब प्रकारसे शीघ्र ही बदल डालेंगे। परन्तु दुर्दैवकी बात यह कि आज हमारा अनुभव अुसके विपरीत है। अिसके अनेक कारण हैं। अुनमें सबसे प्रमुख और महत्त्वका कारण यह है कि हमारी प्रजाको राष्ट्रधर्मका ज्ञान नहीं है। अब तक अुसकी जागृति हममें नहीं हुओी है। साधारणतया व्यक्तिगत सुख-सुविधाओंको ध्यानमें रखकर हम जीवनका विचार करते रहते हैं और अुसके अनुसार आचरण करनेकी हमारी प्रवृत्तिमें, जो सदियोंसे बनी हुओी है, अब तक रत्तिमात्र भी परिवर्तन नहीं हुआ है। हमारी अिस प्रवृत्तिके कारण हम दिन-ब-दिन शीघ्रतासे अधोगतिकी ओर घसीटे जा रहे हैं। फलस्वरूप हम आपसके प्रेम, विश्वास, आदर, अेकता आदि पवित्र भावोंको गंवा बैठे हैं, और समाजमें असमाधानकी वृद्धि होती जा रही है। अनेक प्रकारसे अुसके परिणाम समाज पर अनिष्ट ही हो रहे हैं।

अिस स्थितिमें भी आशाका प्रकाश दिखाओी दे रहा है और हमारे सौभाग्यसे धार्मिक, राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्रमें समाजके सच्चे कल्याणका विचार करनेवाले कओी नेता विद्यमान हैं। अुसके लिअे वे जी-जान न्योछावर कर रहे हैं। अुन सबको वर्तमान स्थितिसे दुःख हो रहा है, चाहे वे किसी भी धर्म या पक्षके हों। अुन सबकी यह निश्चित धारणा है कि अपनी प्रजाकी नीति विषयक योग्यताका मानदंड अूंचा हुअे बिना — चारित्र्य और शीलका स्तर अुच्चतर हुअे बिना — आजकी घोर और अंधकारमय विषम स्थितिसे पार होना असंभवनीय होगा। क्या समाजकी स्थिति समाजके नैतिक आचरण पर अवलम्बित नहीं है? नीति, चारित्र्य, शील और सदाचारके बिना धर्मका अस्तित्व नहीं रहता और धर्मके अतिरिक्त समाजका टिकना सदैव अशक्यप्राय है। समाजके सच्चे सेवक तथा नेतागण अिन बातोंको सिद्धांत ही मानते आये हैं। अुनको प्रतीत होनेवाली यह बात यदि समस्त प्रजाजनोंके हृदयपट पर दृढ़ रूपसे अंकित हो जाय तो थोड़े ही दिनोंमें स्वराज्य सुराज होगा अिसमें तिलमात्र भी संदेह नहीं है।

जीवन-निर्वाहके लिअे आवश्यक वस्तुओंकी विपुलताका होना जिस प्रकार जरूरी है अुसी प्रकार अपना जीवन पवित्र बनानेकी भी हमें अत्यन्त आवश्यकता है। सब व्यवहार न्याय-पूर्वक और शुद्धतासे करनेका प्रयत्न करना यह हमारा आद्य कर्तव्य है। हममें तथा अखिल समाजमें अिस कर्तव्यकी प्रतीति निर्माण करनेके हेतुसे प्रेरित होकर "व्यवहार शुद्धि मंडल" गत दो वर्षोंसे अपनी शक्तिके अनुसार कार्य कर रहा है। अिस कार्यको गति तथा चेतना देनेके हेतुसे बम्बअी और अुसके अुपनगरोंमें अेक सप्ताहके कार्यक्रमका आयोजन करनेमें मंडल व्यग्र है। 'हमारे और समाजके, दोनोंके व्यवहारोंमें शुद्धि हो तथा हममें सच्ची नागरिकता और मानवता अुत्पन्न हो, अैसी अिच्छा रखनेवाला प्रत्येक व्यक्ति अिस कार्यमें सहयोग दे' अैसी मैं नम्रतापूर्वक मंडलकी ओरसे आग्रह भरी प्रार्थना कर रहा हूं।

सोमवार दिनांक २८ मओीसे लेकर रविवार दिनांक ३ जून तक सप्ताहका कार्यक्रम निश्चित किया गया है।

१८७, हार्नबी रोड़,
फोर्ट, बम्बअी १

भवदीय,
केदारनाथ

* सोमनाथकी प्रतिष्ठा-विधिके अवसर पर दिये गये भाषणका अेक अंश, १२ मओीके 'नागपुर टाअिम्स'से।

हमारा नया प्रकाशन

सर्वोदयका सिद्धान्त

कीमत ०-१२-० डाकखर्च ०-२-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर,
अहमदाबाद-९

www.vinoba.in

विनोबाकी पैदल यात्रा

८

सोलहवां मुकाम

[ता० २३-३-'५१: सोन: ९ मील]

अिस नौ मीलके छोटेसे और बड़े सबेरेके यानी अरुणोदयके पूर्वकी चांदनीके प्रवासमें लोगोंने चार जगह हमारा स्वागत किया। नीरांजन, कुमकुम और भजन आदिकी आवृत्ति तो अब अिस स्वागतका सामान्य दृश्य हो गयी है।

गोदावरीके किनारे सोन क्षेत्र-स्थान है। अभी तकके प्रवासमें हम ब्राह्मणोंसे शायद ही मिले। रेड्डी लोग ही विशेष रूपसे दिखाअी दिये। यहां पण्डितोंसे भेंट हुअी।

'सोन' पुराना सुवर्णपुर ही है। कहते हैं परशुरामने यहां तपश्चर्या की थी। बड़ा यज्ञ किया था। परशुरामने ब्राह्मणोंको सुवर्ण-दान दिया था — अितना कि सोनेकी नदी बहा दी थी। फिर भी ब्राह्मणोंको संतोष नहीं हुआ। क्रोधवश परशुरामने शाप दिया और सुवर्णकी नदीमें पानी हो गया। वह नदी आगे जाकर गोदावरीमें विलीन होती है। ब्राह्मणोंने कहा, महाराज यह पुराना तीर्थ है। हम लोग पहले यहां सुखी थे, परंतु आज हमारी स्थिति खराब है। कअी लोग गांव छोड़कर बाहर चले गये हैं। कुछ पढ़ाअीके लिअे, कुछ कमाअीके लिअे। यहां अेक अच्छा विद्यालय खोलनेकी बड़ी आवश्यकता है। वे कुछ निराश-से दीखते थे और अपनी समस्याओंके हलमें विनोबाका मार्गदर्शन चाहते थे।

अिस बीच, यहां भी अिर्द-गिर्दके गांवोंसे बहिनें अपने चरखे लेकर आ गयी थीं। विनोबाने देखा कि वे चरखा तो चला रही हैं, पर अुनके शरीर पर मिलके कपड़े हैं। अपने प्रार्थना-प्रवचनमें अुन्होंने अिन दोनों बातोंकी चर्चा की।

"आप लोग कातती हैं यह अच्छा है। परंतु पुरुषोंको भी कातना चाहिये। आप सबको गांवकी बनी चीजें खरीदनी चाहियें। गांवका लुहार अगर गांवके बढ़अीकी चीजें न खरीदकर बाहरकी खरीदेगा, गांवका बुनकर अगर गांवके चमारकी चीजें नहीं खरीदेगा और चमार बुनकरकी बनी चीजें नहीं खरीदेगा, तो गांवकी लक्ष्मी गांवके बाहर चली जायगी। गांववालोंको परस्पर प्रेमसे रहना चाहिये। प्रेमका अर्थ ही यह है कि सब अेक-दूसरेकी रक्षा करें। गांवके चमारका जूता हम नहीं खरीदेंगे, बाहरका लेंगे, तो गांवका चमार मर जायगा। अिस तरह हमारे चमारको हम रक्षण नहीं देते हैं, तो कहा जायगा कि हम अुस पर प्रेम नहीं करते। यही बात सब अुद्योगोंके लिअे लागू होती है। लेकिन हम कहते हैं कि गांवोंकी चीजें महंगी होती हैं। सच पूछा जाय तो महंगे-सस्तेका हिसाब लगानेका यह तरीका ही गलत है।

"वर्ण-धर्मका अर्थ तो यह है कि हरअेक अपनी जीविकाके लिअे अपने पूर्वजोंका धंधा करे। लेकिन अगर हम गांवके कारीगरोंको आश्रय नहीं दें तो यह कैसे हो सकता है? आप ब्राह्मण हैं। वर्णधर्मके अभिमानी हैं। लेकिन आपके शरीर पर मिलके कपड़े हैं, और पांवोंमें कारखानेके बने जूते हैं। तो फिर आप लोग वर्ण-धर्मकी प्रतिष्ठा कैसे बढ़ावेंगे? गांवमें शिक्षित ब्राह्मणोंकी कमी नहीं है। तब फिर यहां स्कूल क्यों नहीं है? किसीको अैसी अुम्मीद नहीं करना चाहिये कि सरकार ही हर जगह स्कूल खोलेगी। सरकार बड़ी मुश्किलमें है। लेकिन यह काम तो आप लोग अपने ही प्रयत्नसे कर सकते हैं। अिस गांवकी जनसंख्या दो हजारसे भी कम है। सुबह-शाम दोनों बार अेक-अेक घंटा ही यदि कुछ वर्ग चलाये जायं, तो पांच-सात सालमें सारा गांव लिखना-पढ़ना सीख जायगा। और यह सारा विद्यादान निःशुल्क होना चाहिये।"

प्रार्थनाके बाद ये ब्राह्मण विनोबाके पास आये और अुन्होंने अिस कामको अुठानेकी अपनी तैयारी जाहिर की। तीन शिक्षकोंने अपने नाम लिखाये। स्कूलका नाम 'सर्वोदय विद्यालय' रखना तय हुआ। सम्पूर्ण गांवकी शिक्षाका १० वर्षका कार्यक्रम बनाया गया — २५ विद्यार्थियोंके लिअे अेक शिक्षक, ६ माहकी अेकाग्र तालीम, सालमें विद्यार्थियोंके दो दल तैयार होंगे। अेक शिक्षक सालमें ५० विद्यार्थी पढ़ायेगा, अिस तरह चार शिक्षक २०० विद्यार्थी पढ़ायेंगे। प्रौढ़ोंके लिअे रात्रि-शालाकी व्यवस्था रहेगी। यह था कार्यक्रमका खाका। अिस तरह सोनको राष्ट्रके सामने अेक आदर्श पेश करनेका मौका मिला। अुन्होंने विनोबासे कामकी विस्तृत चर्चा की और वचन दिया कि काम दो-चार दिनमें ही शुरू हो जायगा। (अगले मुकाम पर हमने सुना कि काम बराबर शुरू हो गया।)

सत्रहवां मुकाम

(ता० २४-३-'५१ : नालकोंडा : ११ मील)

सोनसे चलने लगे, तो जिलेके डी० अेस० पी० ने खबर भेजी कि आसपासके अिलाकेमें कम्युनिस्टोंका डर है अिसलिअे यदि विनोबाजी स्वीकार करें, तो वह साथमें अगले मुकाम तक सशस्त्र सिपाहियोंकी अेक छोटी टोली भेजना चाहेंगे। विनोबाने अुत्तर दिया कि यदि पुलिस साथ रहना ही चाहती है, तो सामान्य शिष्टाचारके अनुसार अुसे साधारण वेषमें ही रहना चाहिये। मेरे साथ सशस्त्र सिपाहियोंके चलनेका सवाल तो अुठता ही नहीं।

सोनसे ६ मील दूर मुकफलमें गांवके मुखियाने विनोबाजीसे गांवके लोगोंसे दो शब्द कहनेका आग्रह किया। मुकामसे पहले, रास्तेके गांवोंमें, विनोबाको बोलनेके लिअे राजी करना कठिन काम है। लेकिन लोगोंकी श्रद्धा और अुनका अनुशासन देखकर वे प्रभावित हुअे और अपने अिस साधारण नियमका भंग करते हुअे अुन्होंने कहा: "आपसे मिलकर मुझे आनन्द हुआ है। जो लोग आरमूर तक आ सकते हैं, वे वहां आयेंगे ही। यहां मैं आपको अेक खुशीकी खबर सुनाता हूं। सोनके निवासियोंने अपने गांवकी सारी शिक्षाकी व्यवस्था खुद ही करना तय किया है। वे लोग बाहरकी मदद नहीं लेंगे। यह अेक अैसा अुदाहरण है, जिसका अनुकरण किया जा सकता है। आखिर हमारी सारी समस्याओंका हल शिक्षा ही तो है। आपके प्रेमका मैं आभार मानता हूं।" बस हम लोग आगे बढ़ गये। किशनगढ़में सेवा-मंदिरके कार्यकर्ताओंने अुन्हें माला पहिनाअी और अपनी अस्पतालके कामका हाल सुनाया। गांव छोटासा है, और ये कुछ कार्यकर्ता अपनी आरोग्य-सम्बन्धी सेवा-शुश्रूसा द्वारा अिस गांवकी और आसपासके गांवोंकी बड़ी मदद कर रहे हैं। यह केन्द्र कस्तूरबा सूतिका-गृहका रूप आसानीसे ले सकता है।

बालकोंडामें हमारा बाड़ा पुरुषों और स्त्रियोंसे पूरा भर गया था। अुनकी संख्या १०००से कम नहीं थी। श्री हनुमंत रेड्डीने विनोबाजीका स्वागत किया और लोगोंको दिनका कार्यक्रम बताया। अुनसे पांच बजे आनेको कहा गया था, लेकिन वे तो दिनभर ही आते रहे, खासकर स्त्रियां जो अिर्द-गिर्दके गांवोंसे आयी थीं। तीन बजे तक तो सारी जगह स्त्रियोंसे बिलकुल भर गयी। अिन सब लोगोंको पांच बजे तक ठहराना अुचित नहीं लगता था। अिसलिअे विनोबा जाकर अुनके बीचमें खड़े हो गये और बोलना शुरू किया:

अभी दो-तीन सालके पहले आपका यह हैदराबाद राज्य बड़ा दुःखी था। रजाकार लोगोंका जुल्म चल रहा था और आप सब लोग भयभीत थे। कोअी कुछ कर नहीं सकता था। लेकिन रजाकारोंकी सल्तनत खतम हुअी और आप लोग अब आजादीसे अिकट्ठे हुअे हैं। नहीं तो अैसी सभाओंमें कौन आ सकता था?

www.vinoba.in

लेकिन आजादीका यह मतलब नहीं है कि आप बिना काम किये सुखी हो जायंगे। हम लोग हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेंगे, तो हम आजाद हो गये हैं अिसलिअे मुफ्त खाने या पहननेको थोड़े ही मिलनेवाला है?

आज मैंने देखा यहां पर बहुतसी स्त्रियां कात रही थीं। लेकिन वह देखकर भी मुझे आनन्द नहीं हुआ। क्योंकि कातनेवाली बहनोंके बदन पर तो मिलका ही कपड़ा था। कातनेसे मजदूरी मिलती है, अिसलिअे वे कातती हैं। लेकिन हमारे सूतकी कीमत अगर हम नहीं करेंगे, तो लोग क्यों करेंगे? हमें हमारे सूतका ही कपड़ा पहनना चाहिये।

लोग मानते हैं कि हमको सरकार अनाज दे, कपड़ा दे। लेकिन क्या सरकारके पास अनाजका और कपड़ेका खजाना है? हम सब हमारी सरकारके सिपाही हैं। अगर हम सिपाही काम नहीं करेंगे तो हमारी सरकार भी बेकार हो जायगी। हम काम करेंगे तभी सरकार भी मजबूत बनेगी।

अिसलिअे आपको मेरी सूचना है कि आप सब मिलकर अेक समिति बनाअिये। अुस समिति द्वारा गांवका सारा कारोबार चलाअिये। गांवमें झगड़ा हो तो बाहरकी अदालतमें नहीं जाना चाहिये। गांवमें कोअी न कोअी सज्जन होते ही हैं। अुनके सामने अपना झगड़ा रखकर अुनका फैसला मानना चाहिये। सारे गांवका हिसाब करके अुसमें क्या बोना चाहिये, यह तय करना चाहिये। आपके गांवमें सब तरहकी शक्ति है। अनाज आप तैयार करते हैं, तरकारी आप पैदा करते हैं, दूध-घी भी आपके यहां होता है। अितना होते हुअे भी आप भिखारी हैं, क्योंकि ये चीजें आप खा नहीं सकते, अुनको बेचना चाहते हैं। और बेचते क्यों हैं? पैसेके लिअे। और पैसा क्यों चाहिये? बाहरसे सारा पक्का माल खरीदनेके लिअे। अपना कच्चा माल आप बेचते हैं और पक्का माल मोल लेते हैं। अिस तरहसे आप लोग स्वराज्यका अनुभव नहीं कर सकेंगे।

और अेक बात आपको कहनी है। हरेक गांवमें अलग-अलग पार्टियां होती हैं। अुससे गांवमें झगड़े होते हैं। लेकिन सारा गांव अेक कुटुम्बके जैसा होना चाहिये। कोअी अगर आपसे पूछे कि क्या आप कांग्रेसवाले हैं या कम्युनिस्ट हैं या समाजवादी हैं, तो जवाब देना चाहिये कि हम हमारे गांवके हैं और अुस गांवकी सेवा यही हमारा धर्म है। भगवान श्रीकृष्णके गोकुलमें सारा गोकुल अेक कुटुम्ब बन गया था। अुस तरह आपका गांव गोकुल बनना चाहिये। अिस तरह अपने गांववालों पर प्रेम करना सीखो, तो सारा गांव भगवानका निवासस्थान बन जायगा।

आखिरमें अेक बात। आप लोग नमस्कार करनेके लिअे आते हैं और पांव पर सिर झुकाते हैं। आप लोगोंको खड़े रहकर ही नमस्कार करना चाहिये। हमको सीखना चाहिये कि हम किसीके आगे अिस तरह अपना सिर नहीं झुकायेंगे। हमें अपना आदर और प्रेम प्रगट करना हो, तो दोनों हाथ जोड़कर नम्रतासे सिर झुकाकर खड़े खड़े ही नमस्कार करना चाहिये। पैर तक सिर नहीं झुकाना चाहिये।

जिस मंदिरमें हम लोग ठहराये गये थे, अुसीके अहातेमें सभा हुअी थी। अुसमें अेक ही दरवाजा था और डर था कि निकलते समय बड़ी भीड़भाड़ होगी। विनोबा खुद वहां खड़े हो गये। विनोबाके हाथसे प्रसाद बांटनेकी व्यवस्था की गयी थी। करीब २००० आदमियोंने प्रसाद पाया। वहांसे जब वे अपने कमरेमें वापिस आये, तब बोले — 'आज मैंने नारायणके १९५० रूपोंके दर्शन किये।' जीवन और मनुष्यको देखनेकी विनोबाकी अैसी ही दृष्टि है।

अिस तरह हमने आदिलाबादका प्रवास पूरा करके गोदावरी पार की और निजामाबाद जिलेमें प्रवेश किया।

वा० मू०

टिप्पणियां

वस्त्र-संकटके लिअे अुपाय

आज देशमें कपड़ेके लिअे जिस तरहकी कमी है वह तो सर्व-विदित है। सरकार तथा कांग्रेस-कर्मी अुस कमीको दूर करनेके लिअे भरपूर प्रयत्न कर रहे हैं। मगर नवनिर्मित स्वराज्यसे पैदा होनेवाली स्वतंत्रताकी भावनाके स्थान पर स्वच्छन्दताकी प्रवृत्ति ही लोगोंमें अधिक काम कर रही है जिसके फलस्वरूप बराबर मिलें हड़ताल करके कठिनाअीको बढ़ानेके विचारसे बन्द रखी जा रही हैं और देशसेवकोंका प्रयत्न प्रायः विफल हो रहा है। देहातके करघे भी कुछ मदद कर सकत थ परन्तु हड़तालादिके फलस्वरूप ही अुन्हें सूत पर्याप्त मात्रामें नहीं मिल रहा है। अैसी हालतमें लोगोंके सामने अेक ही रास्ता रह जाता है कि वे अपने घरोंमें चरखे या तकलियों पर सूत कातकर और अुस सूतको दुबटाकरके सुलभ, कमखर्च और सुविधासे बननेवाले कमर-करघे पर कपड़ा बनाकर वस्त्रसंकटके अैसे समयमें मिल और पूंजीपतियोंकी गुलामीसे मुक्त हों। अिसमें सरकारका सहयोग भी अपेक्षित है।

अभी जिलान्तर्गत नवीनगर थानावस्थित बिहार खादी समिति शिक्षण-केन्द्रकी ओरसे सघन कताअी मंडलकी स्थापनाको मद्दे नजर रखकर कार्यकर्त्तागण ग्राम-सफाअीसे लेकर तुनाअी, कताअी और कमर-करघेकी बुनाअी तकका प्रचार करनेके लिअे देहातोंमें जाते हैं तो ग्रामीण अुनका अिस वस्त्राभावके भीषण संकटके समय हृदयसे स्वागत करते हुअे अघाते नहीं। परन्तु गरीबीने अुनकी कमर अिस तरह तोड़ दी है कि अिन अल्प मूल्यके सामानोंको भी खरीदनेमें वे असमर्थता प्रगट करते हैं, साथ ही अपनी सरकारसे अपेक्षा रखते हैं कि ओटाअी, तुनाअी, धुनाअी, कताअी तथा कमर-करघेकी बुनाअी आदिके सामान अेवं कपास अथवा रूअी भी बिना मूल्य अथवा अल्प मूल्यमें देनेकी सुलभता प्रदान करे।

अिसमें चरखा संघके साथ सरकारको भी 'सूत्रधार' के रूपमें अुतरना ही चाहिये।

रघुनाथप्रसाद यादव

हिन्दी, मराठी, गुजराती शीघ्रलिपि वर्ग

गोविन्दराम सेकसरिया अर्थ-वाणिज्य महाविद्यालय, वर्धाकी ओरसे हिन्दी, मराठी तथा गुजराती शीघ्रलिपिके वर्ग १६ जुलाअी, १९५१ से शुरू होंगे। पत्रलेखनके लिअे ६ महीने तथा रिपोर्टिंगके लिअे १० महीनेका पाठ्यक्रम रहेगा। अिसके अतिरिक्त विद्यार्थियोंको नागरी टाअिप राअिटिंगकी शिक्षा भी दी जायगी। अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको कालेजकी ओरसे प्रमाणपत्र दिये जायंगे। विद्यार्थी अपनी अुम्र तथा शिक्षा संबन्धी प्रमाणपत्रोंके साथ आवेदनपत्र ३० जून, १९५१ तक आचार्यके पास भेज दें। छपे आवेदनपत्र ३ पैसेके पोस्टके टिकिट भेजने पर कालेज कार्यालयसे प्राप्त हो सकेंगे।

पत्रलेखनका शुल्क रु० ६० तथा रिपोर्टिंगका रु० १२० होगा। पत्रलेखनमें अुत्तीर्ण विद्यार्थियोंको ही रिपोर्टिंग वर्गमें स्थान मिल सकेगा। विद्यार्थियोंको अपने रहने तथा खानेकी व्यवस्था खुद करनी होगी। छात्रालयोंमें थोड़े स्थान शीघ्रलिपिके विद्यार्थियोंके लिअे सुरक्षित रखे गये हैं, जो रु० २५ अग्रीम भेजकर निश्चित करने-वालोंको ही दिये जायंगे।

हिन्दी, मराठी तथा गुजराती शीघ्रलेखकोंकी आवश्यकता सरकारी अेवं गैरसरकारी महकमोंमें तथा पत्रकारोंको काफी संख्यामें है। अिसलिअे आशा है कि विद्यार्थी काफी संख्यामें भरती होकर अिस वर्गका लाभ अुठायेंगे।

वर्धामें पढ़ाअी जानेवाली पद्धति भारत सरकारकी विधान सभा द्वारा नियुक्त समितिने मान्य की है। १९४८-४९ तथा १९४९-५०के सत्रमें भारतके भिन्न-भिन्न प्रांतोंसे, जैसे गुजरात, आसाम, बिहार, अुत्तर प्रदेश, विंध्यप्रदेश, बम्बअी, मद्रास, कच्छ तथा मध्यप्रदेशके विद्यार्थियोंने "शीघ्रलिपि प्रवीण" की अुपाधि प्राप्त कर ली है।

www.vinoba.in

हरिजनसेवक
२६ मअी १९५१

धर्म-निरपेक्ष राज्यकी व्याख्या

श्री हरिप्रसाद व्यास लिखते हैं:

"जबसे यह घोषणा हुअी है कि भारत धर्म-निरपेक्ष राज्य है, तभीसे बार-बार अैसी शंकायें लोगोंने अुठाअी हैं कि क्या हमारी सरकार धार्मिक कार्योंको प्रोत्साहन दे सकती है? शालाओंमें धार्मिक शिक्षाकी व्यवस्था कर सकती है? धार्मिक संस्थाओंकी आर्थिक मदद कर सकती है, या अैसा कोअी भी काम कर सकती है जिसका संबंध धर्मसे हो? यहां मैं अपने राज्यके धर्म-निरपक्ष स्वरूपका अर्थ और भाव समझनेका नम्र प्रयत्न करना चाहता हूं।

"मुझे लगता है कि भारत धर्म-निरपेक्ष राज्य है अिसका अर्थ यहां अितना ही है कि हमारे यहां किसी खास धर्मको राज्यकी मान्यता नहीं दी गअी है। वह अपनी जनतामें अुनके धर्मके आधार पर कोअी भेद-भाव नहीं करता। सबको समान स्थान देता है, किसीको कम-ज्यादा नहीं मानता। कअी शिक्षित लोगोंका यह खयाल है कि अपनी धर्म-निरपेक्षताकी नीतिके अनुसार राज्यको धर्मके झंझटमें बिलकुल पड़ना ही नहीं चाहिये; अुनके मतसे धर्म तो व्यक्तिका निजी मामला है, हरअेक आदमी अपने सहधर्मियोंके साथ अपनी अिच्छानुसार अुसका पालन करता रहे। राज्यको न तो अुसमें कोअी मदद करना चाहिये, और न किसी तरहका दखल ही देना चाहिये। मुझे लगता है कि धर्म-निरपेक्षताका यह अर्थ न तो है, न होना चाहिये।

"अिस अर्थमें धर्मका बहिष्कार दिखता है, और मेरी मान्यता है कि भारत राज्यके धर्म-निरपेक्ष स्वरूपका यदि अैसा अर्थ किया गया, तो यह नीति भारतमें यशस्वी नहीं होगी। अिससे तो गोया हमारा आध्यात्मिक दिवालियापन सिद्ध होगा। जिस देशकी प्रजा पर धार्मिक भावनाका अितना गहरा रंग है, वह यदि अुससे अुदासीन रहे, या अुसकी लापरवाही करे, तो राष्ट्रके जीवन पर अुसका बुरा परिणाम हुअे बिना नहीं रहेगा।

"यदि जनताके जीवन-मानकी वृद्धि और लोकहितकारी राज्यकी स्थापना सरकारका फर्ज है, तो प्रजाकी धार्मिक शिक्षाकी योग्य व्यवस्था करना भी अुसका अुतना ही महत्त्व-पूर्ण फर्ज होना चाहिये। आखिर मनुष्यको शरीरके पोषणके लिअे रोटीकी जितनी आवश्यकता है, अुतनी ही आवश्यकता आत्माको अुसकी योग्य खुराक पहुंचानेकी है। अिस प्रसंगमें गांधीजीके शब्द स्मरण करने योग्य हैं:

> 'मुझे यह जानकर दुःख हुआ कि मैसूरके विद्यार्थियोंको राज्यके स्कूलोंमें कोअी धार्मिक शिक्षण नहीं दिया जाता। . . . लेकिन अगर हिन्दुस्तानको आध्यात्मिकताका दिवाला नहीं निकालना है, तो अुसे अपने बच्चोंकी धार्मिक शिक्षाको भी धर्म-निरपेक्ष शिक्षणके बराबर ही महत्त्व देना पड़ेगा।' ('यंग अिन्डिया,' २५-८-'२७)

"मुझे लगता है कि धर्मके प्रति शुद्ध नकारात्मक भाव रखना गलत है। भारतकी धर्म-निरपेक्ष सरकारको धर्मके प्रति भावात्मक और रचनात्मक नीति अपनानी चाहिये। हमें यह खास तौर पर जाहिर कर देना चाहिये कि भारतकी धर्म-निरपेक्षता किसी धर्मके अनादरमें नहीं, सब धर्मोंके प्रति समान आदरकी दृष्टि अर्थात् सर्व-धर्म-समभावमें है। साथ ही अुसे अुन संस्थाओंकी मदद भी करनी चाहिये जो किसी साम्प्रदायिक धर्मकी नहीं, बल्कि अुससे भिन्न विश्वधर्मकी समग्र दृष्टि बढ़ाती हैं। जो संस्थाअें किसी अेक ही विशेष धर्मके अनुयायियों द्वारा या अुनके ही हितमें चलायी जाती हैं, अुनमें से सरकारको सिर्फ अुनकी मदद करनी चाहिये जो जाति या सम्प्रदायका भेदभाव किये बिना सब लोगोंको अपनी शिक्षा या दूसरी सेवाओंका लाभ देती हैं, तथा सब धर्मोंके प्रति समान आदरका भाव रखना सिखाती हैं। अुदाहरणके लिअे, रामकृष्ण-मिशन अपनी सेवाअे धर्मका भेदभाव किये बिना सब लोगोंको देता है। यदि सरकार अैसी संस्थाओंकी सहायता करती है, तो अिसमें किसीको कोअी आपत्ति नहीं होनी चाहिये। अिसी तरह यदि कोअी मुस्लिम मस्जिद या अंजुमन सब लोगोंके लिअे खुली हो, और किसीसे मुसलमान बननेको न कहते हुअे सबको कुरान पढ़ाये, साथ ही दूसरे धर्मोंके प्रति आदर रखते हुअे, अुनके तत्त्वोंकी शिक्षा भी दे, तो सरकार अुसकी मदद भी निःसंकोच कर सकती है। अिसी तरह हिन्दू मंदिर, अिसाअी मिशन, आदि संस्थाअे भी अिच्छुक विद्यार्थियोंको अपने धर्मशास्त्र पढ़ायें और साथ ही दूसरे धर्मोंकी शिक्षाओंकी जानकारी भी दें। कोअी धार्मिक संस्था राज्यकी मददकी योग्य अधिकारी है या नहीं अिसकी कसौटी यह होनी चाहिये कि वह सब लोगोंके लिअे खुली हो, दूसरे धर्मोंकी शिक्षाका भी ध्यान रखती हो, चाहे किसी धर्म-विशेषकी ही शिक्षा क्यों न दे, लेकिन सब धर्मोंके प्रति समान आदर सिखाती हो। यदि सरकार खुद अैसी संस्थाओंकी स्थापनाकी दिशामें कदम बढ़ाये और देशका नेतृत्व करे, तो साम्प्रदायिक द्वेष मिटेगा, और विभिन्न धर्मावलम्बियोंमें भाअीचारेका और प्रेमका भाव बढ़ेगा। अिस सिलसिलेमें सोमनाथ मंदिरकी प्रतिष्ठा-विधिके अवसर पर डॉ० राजेन्द्रप्रसाद द्वारा प्रगट किये गये विचार (अन्यत्र प्रकाशित) ध्यान देने योग्य हैं।

"नयी तालीमके व्यवस्थापकोंको अपने अभ्यासक्रममें सबके लिअे सामान्य, सर्व-संग्राही धार्मिक शिक्षाको स्थान देना चाहिये। सम्प्रदाय विशेषकी संस्था अिसके साथ ही अपने धर्मकी विशेष शिक्षा भी दे, सिर्फ अिसका खयाल रखे कि दूसरे धर्मोंके प्रति वह घृणाका भाव पैदा न करे। स्वाभाविक है कि अपने धर्मकी यह विशेष शिक्षा राज्य द्वारा स्वीकृत ढंगसे हो।

"कुछ लोग अैसा मानते दीखते हैं कि भारतकी धर्म-निरपेक्ष सरकार हिन्दुओं या मुसलमानोंके अपने निजी कानूनोंमें किसी तरहका हस्तक्षेप नहीं कर सकती। मुझे लगता है कि यदि सरकार अैसा करे और अैसे कानूनोंको हटा दे जो धर्मके आधार पर नागरिकोंमें भेदभाव करते हैं, तो अुसकी धर्म-निरपेक्षतामें किसी तरहकी बाधा नहीं आती। धर्म-निरपेक्षताकी नीतिके अनुसार तो अैसे कानून सब नागरिकोंके लिअे समान ही होने चाहियें। शादी, विरासत आदिके कानून देश भरके सब नागरिकोंके लिअे अेक ही होने चाहियें।

"कोअी धार्मिक संस्था अनीतिका पोषण करती हो, किसी तरहका भ्रामक प्रचार करती हो, या साम्प्रदायिक द्वेष अुभाड़ती हो, तो धर्म-निरपेक्ष राज्यका यह अधिकार भी मानना चाहिये कि वह अैसी संस्थाओंके काममें हस्तक्षेप कर सकता है।

www.vinoba.in

"संक्षेपमें भारतका धर्म-निरपेक्ष राज्य सर्व-धर्म-समभावको अपना आदर्श माने, हितकारी धार्मिक प्रवृत्तियोंको अुत्तेजन दे, और अिसे अपना अेक मुख्य काम माने।"

श्री हरिप्रसाद व्यासके विचारों और डॉ० राजेन्द्रप्रसाद द्वारा प्रतिपादित सर्व-धर्म-समभावके दृष्टिकोणका मैं समर्थन करता हूं। मैं मानता हूं कि चूंकि हमारा लोकतंत्र, जो कितने ही धर्मों और सम्प्रदायोंके माननेवाले लोगोंका बना हुआ है, यही दृष्टिकोण हमें सही और व्यावहारिक नीति देता है। मेरा अपना मत तो यह है कि जिस तरह राजनीति और जातियोंकी अलग अलग संज्ञाअें (लेबल) मिटा देनी चाहिये, अुसी तरह तरह-तरहके धर्मोंके टिकटोंका भी अेकदम त्याग हो जाना चाहिये। लेकिन धर्मका क्षेत्र ही कुछ अैसा है कि यह अनाम धर्म खुद अेक विशेष नाम बन जा सकता है, और अिस तरह बढ़ते-बढ़ते अुनकी संख्या भी दर्जन तक पहुंच सकती है। और तब, फिर हम अिसी नतीजे पर पहुंचेंगे कि अुन सबके प्रति हमें समान आदरकी दृष्टि रखनी चाहिये।

सब धर्मोंके प्रति समान आदरकी भावनाका अुनमें से किसी अेकमें ही, या सबमें सुधारकी कोशिशसे कोअी विरोध नहीं है। साथ ही हम अुनमें आ गये झूठ और बुराअियोंकी टीका भी कर सकते हैं। अिस दृष्टिसे किसी सुधारक पन्थको भी वही आदर मिलना चाहिये जितना किसी दूसरे धर्मको। ये सुधार अितने क्रान्तिकारी और अितने व्यापक हो सकते हैं कि कालान्तरमें किसी प्राचीन धर्म, या सर्व धर्मका रूप बिलकुल ही बदल जाय। अैसी स्थितिमें कुछ पुरानी संस्थाअें निरुपयोगी हो जायगी और अुनका महत्त्व अेक ध्वंसावशेषका ही रह जायगा। भूतकालकी यादगार या अैतिहासिक सामग्रीके ही रूपमें वे रह जायगी, जैसे कि रोम, ग्रीस, या वेदकालीन पुराने देवता। शायद अच्छा यही है कि धार्मिक परिवर्तन जिहाद और मूर्तियां तोड़नेके अन्ध आवेशमें किये गये आक्रमणोंकी हिंसक रीतिसे नहीं हो, सुधारोंकी रीतिसे हों। सुधार कितने ही हितकारी और विचार-संगत क्यों न हों जब अुन्हें तलवारके बल पर लादा जाता है तब पुनरुत्थान और प्रतिगामिताकी प्रवृत्तियां पनपती हैं।

अरबमें किसीने मक्काकी मस्जिदमें अुन सब मूर्तियोंकी दुबारा प्रतिष्ठा करनेकी कोशिश नहीं की जिन्हें मुहम्मदने अरबवासियोंके अिस्लाम स्वीकार करनेके बाद तोड़ा। साथ ही यह याद रखना चाहिये कि वे काबाको नहीं हटा सके। अुन्हें अुसके लिअे रही हुअी लोगोंकी भावनाकी कद्र करनी पड़ी। और अगरचे अैसा करना शुद्ध विवेकयुक्त नहीं था, लेकिन यह लोकशाहीसे सुसंगत था। लेकिन अुनके धर्मान्ध अनुयायियोंने गैरमुसलमानोंके मंदिर आदि तोड़नेमें तलवारकी ताकतका अुपयोग किया। अिसलिअे अनुकूल मौका मिलने पर पुरानी मूर्तियोंकी दुबारा स्थापना करनेकी प्रवृत्ति पराजित जातियोंके हृदयमें कहीं दबी हुअी पड़ी रही, और पीढ़ी दर पीढ़ी पुसाती चली आयी। घासके अंकुरों या अुन जीवोंकी तरह जो गरमीमें तो नहीं दिखते लेकिन अषाढ़की पहली वर्षाके साथ अुठ खड़े होते हैं, यह दबी हुअी प्रेरणा ज्यों ही राजनीतिक गुलामीका अन्त हुआ कि जोरसे फूट पड़ी। आजकल हम अिसीके दौरसे गुजर रहे हैं। अुससे शायद कुछ हद तक हम विचारका तोल भी खो बैठे हैं। जिन संस्थाओंमें हमारा विश्वास नहीं रह गया है, अुन्हें भी दुबारा चलानेकी कोशिश हो रही है। कुछ समयके बाद हमारा जोश ठंडा पड़ जायगा और तब अपनी अुपेक्षासे ही हम अुन्हें अुजड़ जाने देंगे। वैदिक कालके यज्ञ-यागादि और सोलह संस्कारोंको आज अैसा कौन है जो फिरसे बहुजनमान्य कर दिखाये? कितनी मेहनतके बाद भी आज वेदोंकी सिर्फ संहितायें और पाठक ही रह गये हैं। अुनके सही अर्थके विषयमें तीन-चार हजार वर्षसे अनुमान ही चलता जा रहा है। कुछ दिन तक अेक हवा चली कि जिन्होंने छोड़ दिया है, अुन्हें तथा और लोगोंको भी जनेअू देकर 'द्विज' बना लिया जाय, और होम-हवन आदिका पुनरुद्धार किया जाय। और अब खुद ब्राह्मण ही पूछते हैं कि अगर हम अपने बालकोंको जनेअू न दें तो कोअी हर्ज है? अैसा ही होता है। और अुसका कारण यह है कि लोगोंका जीवन बदल गया है, अुनकी आवश्यकताअें बदल गअी हैं, और अिसलिअे लोकधर्म और श्रद्धा भी बदल गयी है। किसी समय अपने नित्य जीवनमें अिसकी आवश्यकता थी कि अग्निको सदैव रखा जाय। तब हवनोंका महत्त्व था। अुसी तरह घर-घरकी ठाकुरसेवाके बारेमें। जब जीवनके साथ अिनका संबंध नहीं रह गया है, तब अुसकी परवाह कौन करेगा? आजकल हम लोगोंके सामने चरखा, टट्टी-सफाअी, और मेहनत-मजदूरीके कार्योंको धर्मकी तरह रख सकते हैं। लेकिन जनेअू और यज्ञ-हवनादिको कोअी धर्म नहीं कह सकता। विधि करानेवालोंको भी अब अुसमें अर्थ या कीर्तिकी प्राप्तिका ही रस रह गया है, अुससे अधिक कुछ नहीं। अिसमें शक नहीं कि अिसमें बहुतसा पैसा और शक्ति बेकार जाती है, लेकिन अिसका अिलाज नहीं है। सिनेमा आदि शौकोंके पीछे जैसा अपव्यय होता है, वैसा ही यह है। सुधारकको अिससे निराश होनेकी जरूरत नहीं। वह जिस चीजका प्रचार करना चाहता है, वह अगर सचमुच निर्दोष और हितकारी है, तो निश्चय ही प्राचीनके अुद्धारकी यह प्रवृत्ति ज्यों ही अिसका मौसम गया कि सूख जायगी।

वर्धा, १६–५–'५१ **कि० घ० मशरूवाला**

(अंग्रेजी और गुर्जरातीसे)

शुद्ध व्यवहार आन्दोलन

(१) जबसे श्री किशोरलालभाअीका अिस विषयका लेख 'हरिजन'में प्रकाशित हुआ है, कअी सज्जनोंने अिसमें गहरी दिलचस्पी बताअी है। यहांकी सर्व सेवा समितिके दफ्तरमें कअी पत्र आये हैं, अब भी आ रहे हैं। कुछ भाअियोंने प्रारंभिक निवेदन पर अपने हस्ताक्षर करके भेज दिये हैं। बहुतसोंने अिस विषयका साहित्य मांगा है और पूछा है कि क्या करना चाहिये। वास्तवमें अिस आन्दोलनका प्रारम्भ किस प्रकार किया जाय अिसकी आवश्यक जानकारी श्री किशोरलाल-भाअीके अुस लेखमें है ही। अुससे अधिक साहित्य अभी अिकट्ठा नहीं हो पाया है। पत्र-लेखकोंसे मैं लिखा-पढ़ी कर रहा हूं। तथापि सामान्यतः पाठकोंसे यह निवेदन है कि वे श्री किशोरलालभाअीका वह मूल लेख फिरसे पढ़ लें और अुसमें लिखे मुताबिक काम शुरू कर दें। यानी जो शुद्ध व्यवहार करनेको तत्पर हैं, वे अपने निजी व्यवहारमें भरसक शुद्धता लावें। काम खुदसे शुरू करके जो अुनके पहिचानके हों और जिनके वचन-पालन पर वे भरोसा रख सकते हों अुनको अपने साथ जुटावें। अगर कोअी बनी-बनाअी संस्था अिस कामके लायक हो और अिसका भार अुठाना चाहती हो, तो अुसके मार्फत काम शुरू किया जाय। नहीं तो शुद्ध व्यवहारमें शामिल होनेवालोंकी — जिन्होंने प्रारम्भिक निवेदन पर हस्ताक्षर कर दिये हैं — समिति बनावें, अिकट्ठे होकर सोचें कि कौनसी प्रतिज्ञा अुनके सदस्योंके लिअे अुपयुक्त हो सकती है। प्रतिज्ञाओंमें भिन्नता भी आ सकती है, पर वह अितनी कमजोर न हो कि आखिर बेकार हो। प्रतिज्ञा करनेवाले तुरन्त ही अपना व्यवहार भरसक शुद्धिके साथ करने लग जायेंगे। जहां अड़चन खड़ी होगी, वहां अिकट्ठे होकर सोचेंगे कि कठिनाअीमें से रास्ता कैसा निकाला जाय। अिससे अधिक हिदायत अभी यहांसे दे सकना संभव नहीं है। तथापि अिस आन्दोलनको लेकर जो जो महत्त्वकी बातें खड़ी होंगी, वे 'हरिजन'में प्रकाशित की जायंगी। अिस काममें पड़नेवालोंको खुद सोच-विचार कर आगे बढ़ना चाहिये। कहीं दूरसे सूचना मिलनेके लिअे रुकना नहीं चाहिये।

www.vinoba.in

(२) अब तक यहांके दफ्तरमें जो पत्र आये हैं, वे अेक-अेक स्थानसे करीब अेक-अेक व्यक्तिके ही आये हैं। कुछ भाअियोंके लिखनेका आशय यह निकलता है कि अुन्हें यहांकी समितिमें सदस्य बना लिये जायं। पर अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि अिस कामका संगठन स्थानिक ही हो सकता है, ताकि अेक-दूसरेकी मददका सबको लाभ मिले। दूर-दूरके सदस्योंका संगठन करनेसे कोअी लाभ नहीं होगा। सिर्फ पेटलादसे नौ भाअी-बहनोंका हस्ताक्षर सहित प्रारम्भिक निवेदन यहांके दफ्तरमें पहुंच गया है। अैसी स्थितिमें स्थानिक संगठन बनाकर काम तुरन्त शुरू किया जा सकता है।

(३) अिस आन्दोलनमें शामिल होनेके लिअे यद्यपि बहुतसे पत्र यहांके दफ्तरमें आये हैं, तथापि रचनात्मक काममें लगे हुअे प्रमुख कार्यकर्ताओंका ध्यान अिस कामकी ओर अब तक कम पहुंचा है अैसा दीखता है। नये आदमी अपनी शक्तिके अनुसार काम जरूर करेंगे, पर पुराने अनुभवी कार्यकर्ताओंके आगे बढ़े बिना यह आन्दोलन जोर नहीं पकड़ सकेगा। वे खुदके जीवनमें तो प्रायः शुद्धि रखते ही हैं, काम करनेकी रीत भी जानते हैं और अुनका दूसरों पर असर भी पड़ता है। अिसलिअे अुनको अिस कामका प्रारम्भ करके दूसरोंके लिअे अुदाहरण पेश करना चाहिये।

(४) अब तक अिस आन्दोलनमें विशेष तो कुछ नहीं होने पाया है, तथापि अेक बात स्पष्ट हो रही है कि जिन्होंने अिस विषयकी ओर ध्यान दिया है वे अपने व्यवहारकी अशुद्धियां बारीकीसे खोजने लगे हैं और जो बातें पहले वे बिना विचारे करते रहे हैं और जिनमें कुछ दोष है अैसा अुनका ख्याल भी नहीं था, अुनकी बुराअी अुनके ध्यानमें आने लगी है। अैसी कअी बातें हैं जो हम देखादेखी या प्रवाह पतित किये जाते हैं, जो वास्तवमें सदोष रहती हैं; पर अुन दोषोंकी ओर हमारा ध्यान नहीं जाता। यह शोधनकी प्रवृत्ति मनुष्यके जीवनको शुद्ध बनानेके लिअे बहुत आवश्यक है। अिससे अन्तःकरण-शुद्धिका दरवाजा खुलता है। अिस आन्दोलनका यह लाभ बड़े महत्त्वका है।

(५) यहां अेक प्रकरणका अुल्लेख कर देना अुचित होगा, क्योंकि शुद्ध व्यवहारके सिलसिलेमें वैसे सवाल आजकी परिस्थितिमें बहुतोंके सामने आते हैं, जिनका हल खोजनेका प्रयत्न हाता रहता है, पर रास्ता नहीं दीखता। गुजरातमें अेक भाअीको जी-तोड़ प्रयत्न करने पर भी नियंत्रित दर पर गुड़ नहीं मिला, यद्यपि बाजारमें अधिक भाव पर चाहे जितना गुड़ मिल सकता था। अुन्होंने काफी समय तक बिना शक्कर और गुड़के निभाया। पर अन्तमें अुनके धीरजकी मर्यादा आ गयी। खुद गुड़के व्यापारियोंको भी अधिक भावसे गुड़ खरीदना पड़ता था, तब वे अिनको कम भावसे कैसे बेच सकते थे? अन्तमें अिन भाअीने अपने जिलेके कलेक्टरको और अुच्च अधिकारियोंको भी लिखा कि अगर मुझे पन्द्रह दिनोंमें नियंत्रित भावसे गुड़ मिलनेका प्रबन्ध नहीं कर दिया जायगा तो मैं अधिक भावसे बाजारमें गुड़को खरीदी करूंगा और अुसकी सूचना सरकारको दे दूंगा। अपने लिअे आवश्यक गुड़की मात्रा भी लिख दी। साथमें यह भी लिख दिया कि जिस व्यापारीसे अधिक दरसे गुड़ खरीदा जायगा अुसका नाम अुसकी अिजाजतके बिना नहीं बताया जायगा। परिणाम यह हुआ कि कलेक्टर साहबने अुनको बता दिया कि अमुक जगहसे अुनको नियंत्रित भावसे गुड़ मिल जायगा। पाठक देखेंगे कि अिस भाअीने व्यापारीको बचा लिया और सारी जोखिम अपने सिर पर ओढ़ ली। हमें सोच-विचार कर अैसे ही कुछ रास्ते ढूंढते रहना चाहिये जिससे कि आजकी विषम परिस्थितिमें हम अपना निर्वाह निर्दोषतासे चला सकें।

बजाजवाड़ी, वर्धा
११-५-'५१

श्रीकृष्णदास जाजू

सत्यकी खातिर

तीस सालसे अूपरकी बात है। गांधीजीने अपने देशवासियोंसे कहा कि शराब और नशीली चीजोंके अिस्तेमालकी हमें बिलकुल मनाही कर देनी चाहिये। अुस वक्तसे शराबबन्दी कांग्रेस कार्यक्रमका अेक खास हिस्सा रही है। अिसलिअे जब पहली मर्तबा कांग्रेसके हाथोंमें हुकूमतकी बागडोर आअी, तो करीब-करीब सभी सूबोंकी सरकारोंने बड़े जोशके साथ शराबबन्दीका काम शुरू किया। खास तौरसे मंद्रास और बम्बअीने अिस तरफ बहुत बड़े कदम अुठाये। अिस सबका अितना बड़ा असर हुआ कि कांग्रेस मिनिस्ट्रियोंके अिस्तीफेके बाद भी — जब गवर्नर लोग दफा ९३ के मातहत राज करते थे — कुछ सूबोंमें यह हितकारी कार्यक्रम चलता रहा। अिसके बाद जब कांग्रेस मिनिस्ट्रियां वापिस आअीं, तब अुन्होंने फिर जोरशोरसे अुसे आगे बढ़ाया। सारे देशमें मानो शराबबन्दीकी बंसी बज रही थी।

अचानक गांधीजीका अिन्तकाल हुआ। अिस जबरदस्त घटनासे मानो हिन्दुस्तानके शासकों परसे अेक बड़ा भारी बोझ अुतर गया। अैसा लगता था मानो डॉक्टरके जानेके बाद अुसकी दी हुअी कड़वी दवाकी खुराक मरीजने कै करके निकाल दी। यह होश ही नहीं था कि अिससे अुसकी तकलीफ बढ़ेगी। हम देखते हैं कि धीरे-धीरे हमारी सभी सूबा-सरकारें, केन्द्रीय सरकार तक, अेकके बाद अेक हर अैसे प्रोग्रामको छोड़ती जा रही हैं, जो कल तक हमें अपनी जानसे ज्यादा प्यारे थे। अिनमें सबसे ज्यादा दुर्गति हुअी है शराबबन्दीके प्रोग्रामकी। क्या दूधकी मक्खीकी तरह अुसको निकालकर बाहर किया जा रहा है?

समाजके कुछ हिस्सेको शराब पीनेकी पुरानी लत है। साथ ही साथ फैशनवाले बड़े समाजमें भी अिसकी अूंची जगह है। लेकिन अैसा शायद ही कोअी हो जो अिसकी बुराअीसे वाकिफ न हो। शायद यही वजह है कि भारतके विधानमें भी हर राजके लिअे यह लाजमी समझा गया है कि वह "खासकर नशीले पेयों और तन्दुरुस्ती बिगाड़नेवाली जड़ी-बूटियोंकी, सिवाय दवाके मतलबोंके लिअे, खपत बन्द करानेका जतन करेगा।"

अपने देशकी बात जाने दीजिये, अभी हालमें पी० टी० आअी० रूटरने लेक सक्सेससे यह खबर दी थी:

लेक सक्सेस, २३ फरवरी

अमरीकन ट्रस्टीशिपके अन्तर्गत प्रशान्त महासागरमें पलाउ नामक द्वीपकी औरतोंने राष्ट्र-मंडलकी ट्रस्टीशिप कौंसिलके पास यह अर्जी भेजी है कि वह शराबबन्दी लागू करे। क्योंकि "शराबसे जो बुराअियां पैदा होती हैं, अुससे वे बहुत तंग आ चुकी हैं।"

अमरीकन प्रतिनिधिने कौंसिलके पिटिशन-ग्रूपसे कह दिया कि नशेकी वजहसे बेजा व्यवहारकी कुछ मिसालें तो जरूर मिलती हैं, लेकिन हुकूमत यह मुनासिब नहीं समझती कि खानगी घरोंमें घुसकर मरदोंका बरताव दुरुस्त करे।

ग्रूपने यह जवाब देनेका तय किया है कि अिस मसलेका हल लोग खुद ही निकाल लें।

अमरीकन प्रतिनिधिका जवाब, या अुनके कदमों पर पिटिशन-ग्रूपका जवाब कोअी महत्त्वकी बात नहीं है। क्योंकि अुनमें से किसीको न तो शराबबन्दीमें यकीन है और न कोअी अैसी कानूनी पाबन्दी (मैन्डेट) ही थी कि वह अिसे लागू करते। लेकिन महत्त्वकी बात तो यह है कि शराबबन्दीके लिअे स्त्रियों द्वारा अर्जी की गअी।

अिस तरह हमें पता चलता है कि शराबबन्दीका प्रोग्राम दुनिया भरमें सबके माफिक है। फिर हमारे देशमें तो और भी ज्यादा। अिसलिअे जब हम यह देखते हैं कि हमारे यहांकी सरकारें

www.vinoba.in

अिसके साथ खिलवाड़ करना चाहती हैं या अिसे रद्द कर देना चाहती हैं, तो बहुत दुःख होता है। पैसेकी कमीका बहाना अकसर बताया जाता है। हम नीचे अेक दर्दनाक वक्तव्य पेश करते हैं, जो अेक बहुत मंजे हुअे रचनात्मक कार्यकर्त्ता और अुड़ीसाके मुख्य मंत्रीने अपनी असेम्बलीमें बजटके भाषणके दौरानमें दिया:

"खास तौर पर यह मेरी जिन्दगीकी अेक बदकिस्मती है जब मैं यह देखता हूं कि आबकारी महकमेमें जो कुछ आज हो रहा है या नहीं हो रहा है, अुसकी जवाबदेही मेरी है। शराब और नशीली चीजोंके बारेमें मेरे बहुत कट्टर विचार हैं। लेकिन जब सरकारी तौर पर अुस सिलसिलेमें अमल करनेकी बात अुठती है, तो मसला अेकदम टेढ़ा हो जाता है। सवाल महज यही नहीं है कि काफी बड़ी आमदनीसे हाथ धोना पड़ेगा, जब कि विकासके कामोंके लिअे चारों तरफसे पैसेकी मांग है। अगर अिस पापकी कमाअीके पैसेको मैं हाथ न लगाअूं, तो अेक व्यक्तिकी हैसियतसे मुझे साधुताके आग्रहका सन्तोष भले हो जाये, लेकिन सरकारको तो कोअी हक नहीं है कि अिस मदसे मिलनेवाले पैसेको छोड़ दे; खास कर अैसी हालतमें जब कि वह बड़े पैमाने पर बनाअी जानेवाली शराबके धन्धेको अच्छी तरहसे रोक न सकती हो। आबकारी महकमेके कामका जो मेरा अनुभव है, अुसके बल पर मैं यह कह सकता हूं कि अिस सूबेके बहुतसे हिस्सोंमें नाजायज तौर पर शराब बनानेकी बुराअीको रोकना अब कितना मुश्किल है। शराबबन्दीको दरअसल कारगर बनानेके लिअे आज हमारा आबकारी महकमा जितना बड़ा है अुससे कहीं बड़े स्टाफकी जरूरत पड़ेगी। हम कितना ही क्यों न चाहें, लेकिन अिस वक्त तो अुस अतिरिक्त खर्चके लिअे पैसा निकालना हमारे लिअे नामुमकिन है। और जब हम लोगोंको अुनके घरों, हातों और जंगलोंमें शराब बनानेसे रोकनेके लिअे पैसा नहीं खर्च कर सकते, तो फिर सरकार अैसे लोगों पर डटकर टैक्स क्यों न लगाये, ताकि अगर वे पियें तो अुन्हें ज्यादा महंगे भाव पर पीना पड़े।?"

नेक मुख्य मंत्रीके लिअे अुनकी जिन्दगीकी बदकिस्मतीके कारण हमारी पूरी हमदर्दी है। लेकिन शराबबन्दीका सख्तसे सख्त दुश्मन भी अेक मुख्य मंत्रीसे और किसी ज्यादा चीजकी तमन्ना नहीं कर सकता था। वे अेक तरफसे चाहते हैं कि शराबके धन्धेसे आमदनी हो और दूसरी तरफसे चाहते हैं कि लोग शराब न पियें। यह दो घोड़ों पर अेक साथ सवारी करनेकी बात है।

शराबके सिलसिलेमें अपनी दिलचस्पी जाहिर करनेके लिअे सरकारोंने अेक दूसरा कमालका ढंग और निकाला है। वह यह कि अैसी कमेटियां मुकर्रर की जायें, जो यह बतायें कि यह चीज लोगोंको पसन्द है या नहीं। मध्य-प्रदेशमें अैसी अेक कमेटी काम कर रही है। राजस्थानमें बननेवाली है। अिन कमेटियोंके फैसलेके बारेमें शक किसे हो सकता है? वे तो सरकारी नीतिकी हांमें हां ही मिलायेंगी। और नीति है शराबबन्दीसे अपना गला छुड़ा लेना। वे शायद यहां तक भी करें कि अिसके खातिर विधानको बदलनेकी कोअी जुगत निकालें।

हमारी सरकारको जनताका पैसा बरबाद करनेमें अजीब मजा आता है। वे काम सीधे न करके घुमा-फिराकर करती हैं। अगर वे शराबबन्दी चाहती हैं, तो किसकी मजाल है कि अुन्हें रोके? अगर नहीं चाहती हैं तो अैसा साफ-साफ, बिना किसी चिकनी-चुपड़ी बातके, कह क्यों नहीं देतीं? आजकलके तंग वक्तमें अुन्हें अिस तरह पैसा नहीं बरबाद करना चाहिये।

सब जानते हैं कि शराबबन्दी ही अेक अकेली चीज नहीं है, जिसे कांग्रेस सरकारोंको अमलमें लाना है। शायद अुन्हें परेशानी अिस बातकी है कि मान लीजिये शराबबन्दीको तो ले लिया, लेकिन फिर दूसरी चीजोंको क्या बिना लिये रह सकेंगे? दूसरी मिसालें न लेकर हम वनस्पतिको ही लेते हैं। सरकार वनस्पति और शराब पर अिस वजहसे पाबन्दी नहीं लगा पाती कि अुनका सम्बन्ध पूंजीपतियों और फैशनवाले समाजसे है। अुनको नाखुश करनेकी जोखिम सरकार अुठा नहीं सकती। शराब तो हिन्दुस्तानके अूंचे दर्जे और अूंची पोजिशन-वालोंकी अेक निशानी बन गअी है। सरकार अजीब फेरमें फंसी है। अिसके अलावा अिससे कौन अिनकार करेगा कि शराबबन्दीको खतम करना या अुसमें ढील करना गांधीकी नीति नहीं है? गांधी क्या चाहते थे; यह सब जानते हैं। अिस पर भी हम डंकेकी चोट यह अैलान करते हैं कि हमारा और दुनियाका भला गांधीके रास्ते पर चलनेमें है।

अगर हम सचमुच गांधीका रास्ता चाहते हैं, तो सरकारको अुस पर अमल करना चाहिये। नहीं तो, सच्चाअीकी खातिर हमारा फर्ज है कि हम गांधीका नाम न लें। अगर शराबबन्दीमें हमें विश्वास नहीं है, तो फिर यह सोचना होगा कि गांधीमें हमें विश्वास है या नहीं। ताज्जुब की बात है कि श्री राजाजी, जो हिन्दुस्तानमें शराबबंदी कानूनके जनक माने जाते हैं और जिन्होंने अिस विषय पर कअी असरकारक लेख और कहानियां लिखी हैं, अिस सम्बन्धमें अपनी राय क्यों नहीं जाहिर करते और राज्यको अपने मूल कार्यक्रमसे न हटनेकी सलाह क्यों नहीं देते।

अभी वक्त है। सरकारें जनहितकी ट्रस्टी हैं। अुन्हें सच्चाअी और अीमानदारीके साथ खुलकर काम करना चाहिये। वे अुसी नीतिको बरतें, जिसे बरतनेका कानूनी फर्ज है। या फिर अुन्हें हिम्मतके साथ साफ लफ्जोंमें कह देना चाहिये कि गांधीकी बातें फिजूलकी हैं और विधानमें दफा ४७ अैसे वक्त पास कर दी थी जब दफा बनानेवाले शराबकी धुनके बजाय अेक दूसरी धुनके असरके नीचे थे।

वर्धा, ६-३-'५१ **सुरेश रामभाअी**

स्वेच्छासे गोमांस-त्याग

[श्री टी० विजयराघवाचार्यसे प्राप्त नीचेकी चीज छापते हुअे मुझे प्रसन्नता होती है।

— कि० घ० म०]

आपने २१ अप्रैलके 'हरिजन'में छपे अपने 'गोवधके खिलाफ अुपवास' लेखमें सुझाया है कि जिन लोगोंको गोमांस खानेमें धार्मिक घृणा नहीं होती, वे भी हिन्दुओंके प्रति अपनी सद्भावना और भाअीचारा प्रकट करनेके नाते स्वेच्छासे गोमांस खाना छोड़ दें। आपके पाठकोंको यह जानकर खुशी होगी कि ४० साल पहले, जब मैं तंजोर म्युनिसिपल कौंसिलका अध्यक्ष था, शहरमें गोमांसका बाजार खोलनेकी अिजाजत पानेके लिअे अर्जी दी गअी थी। जब वह अर्जी कौंसिलके सामने पेश की गअी, तो सारे मुसलमान सदस्योंने अुसका जोरोंसे विरोध किया। अिससे मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ। अुन्होंने मुझे बताया कि तंजोरके हिन्दू राजाने अुनके साथ अितना अच्छा व्यवहार किया कि अुन्होंने राजाके अिस व्यवहारकी प्रशंसा करने और सद्भावना प्रकट करनेकी खातिर स्वेच्छासे गोमांस खाना छोड़ दिया है। अपने कथनको सिद्ध करनेके लिअे अुन्होंने अेक सही-सिक्केवाला रजिस्टर किया हुआ दस्तावेज पेश किया, जिसमें तंजोरके अेक मुसलमानने लखनअूके अेक मुस-लमानके साथ अपनी लड़कीकी शादी करते समय अिस बातका अिकरारनामा लिखाया था कि अुसकी लड़कीसे नये घरमें गो-मांस खानेके लिअे नहीं कहा जायगा।

२५-४-'५१ **टी० विजयराघवाचार्य**

(अंग्रेजीसे)

www.vinoba.in

अस्पृश्यताकी समस्या क्या अब है ही नहीं?

अुड़ीसाके हरिजन प्रवास पर मैं निकला, तो कलकत्तेके हरिजन-कार्यको न देखूं यह कैसे हो सकता था। सन् १९३५ और ३७ अी०में कलकत्तेकी ज़िन नरक-तुल्य मेहतर और डोम बस्तियोंको मैंने देखा था, अुनका बीभत्स चित्र मेरी आंखोंके सामने सदा रहा है। पूज्य बापाने अिन बस्तियोंके बारेमें कारपोरेशनके साथ और बंगाल सरकारके साथ भी काफी लिखा-पढ़ी की थी। पर अुनके प्रयत्नोंका भी कोअी फल नहीं हुआ। गांधीजीके प्रति कलकत्तेके बड़े-बड़े लोगोंकी जो भक्ति-भावना थी और है वह भी अिस सम्बन्धमें कुछ न करा सकी। अिन बारह-तेरह वर्षोंके बीच मैं कितनी ही बार कलकत्ते गया और हर बार अुन नरकोंको देखनेका अिरादा किया, पर देख न सका। अवकी बार तो खास अिसी कामसे गया था; अिसलिअे बंगाल हरिजनसेवक संघके मंत्री प्रो० प्रियरंजन सेनके साथ छह बस्तियां देख डालीं। मुझे बताया गया कि बहुत करके अुन बस्तियोंकी आज भी वही हालत है, जिनको कि मैंने तेरह-चौदह साल पहले देखा था। कहा गया कि अुनमें कोअी सुधार नहीं हुआ, वैसे ही पुराने कनस्तरोंके टुकड़े और टाटके चिथड़े छोटी-छोटी झोंपड़ियों पर पड़े हुअे हैं, वैसी ही गन्दी गटरें कीड़ोंसे बिलबिलाती हुअी सामने और बगलमें बह रही हैं, वैसे ही सड़ी बदबूसे भरे डलाव और डिपो वहींके वहीं बने हुअे हैं। मैंने भी सोचा कि जब सब कुछ यथापूर्वक ही है और तबकी सरकार और तबका कारपोरेशन और तबके नागरिक तो क्या, आजकी स्वराज्य सरकार, आजका कारपोरेशन और आजके स्वतंत्र नागरिक भी अुन कमबख्त बस्तियोंको सुधारने या अुखाड़ फेंकनेके बारेमें अेक कदम भी आगे नहीं बढ़ सके, तब अुन्हें देखनेके लिअे मेरा जाना और नरकोंमें सड़ते हुअे मेहतरोंको झूठी आशा दिलाना बेकार ही नहीं, बल्कि अेक जुर्मके जैसा है।

जो तीन बस्तियां, रात्रि पाठशालाअें देखनेके साथ-साथ पांच-पांच, दस-दस मिनटमें यों ही चलते-फिरते देखीं, वहां वही सब देखा जिसे देखनेका आंखोंको अभ्यास हो गया है। फिर भी अुनकी कुछ अच्छी बस्तियोंमें गिनती की जाती है। ये बस्तियां थीं शम्भुनाथ पंडित स्ट्रीट, विनयबसु रोड और पदमपुकुर रोड। अेक बस्तीमें लगभग २५० मानवप्राणी रहते हैं। अुनके लिअे अेक-अेक बैठकके सिर्फ तीन पाखाने हैं और पानीकी सिर्फ अेक टोंटी। अेक झोंपड़ीमें, जो मुश्किलसे ८ फुट लम्बी और छः फुट चौड़ी थी, पांच प्राणी रहते हैं। अुसीमें अुनका अुठना-बैठना, अुसीमें खाना पकाना और अुसीमें सोना-लेटना भी। किसी झोंपड़ीका भाड़ा ५ रुपये माहवार देते हैं, तो किसीका ८ रुपये माहवार। अैसी बस्तियोंमें भी कलकत्तेका गांधी सेवक संघ रात्रि पाठशालाअें चला रहा है। कार्यकर्त्ताओंका अुत्साह और सेवा-भाव देखकर अेक-दो क्षणके लिअे बस्तियोंकी बात मैं भूल-सा गया। मगर रह-रहकर वही भयंकर दृश्य आंखोंके आगे आने लगा। मुझसे कहा गया कि ये बस्तियां तो जैसी हैं वैसी ही शायद रहेंगी; और यह हालत केवल अिन्हीं बस्तियोंकी नहीं है, वरन् हजारों-लाखों दूसरे गरीब लोग भी अैसी ही बुरी हालतमें रह रहे हैं, और यह भी कि यह तो कुछेक वर्गोंकी गिरी हुअी आर्थिक स्थितिका सीधा परिणाम है। अिस हालतमें क्या तो करे कारपोरेशन और क्या करें समाजसेवक? बंगालमें अस्पृश्यताकी वैसी विकट समस्या नहीं है, जैसी कि अन्य प्रांतोंमें है। और बंगाल सरकारका भी करीब-करीब कुछ अैसा ही मत है। यही कारण है कि अुसने विस्थापित हरिजनोंके पुनर्वासके प्रश्नको अलगसे मान्यता नहीं दी। अिसमें शायद वह स्थायी अलगावका खतरा देखती होगी। सिद्धान्ततः यह दृष्टिकोण सही हो सकता है, पर व्यावहारिक दृष्टिकोणकी अुपेक्षा नहीं की जा सकती।

यह तो कोअी भी नहीं चाहता कि देशके किसी भी हिस्सेमें अस्पृश्यता किसी भी रूपमें बनी रहे। हमारा संविधान भी अुसे दस वर्षके अंदर ही समाप्त कर देना चाहता है। पर वस्तुतः क्या वस्तुस्थिति अैसी ही है? क्या किसीके मानने या न माननेका ही यह प्रश्न है? क्या संविधानकी अमुक शब्दावलि पर संतुष्ट होकर हम सचमुच मान लें कि हमें अब कुछ खास प्रयत्न नहीं करना है? दूसरे राज्योंके मुकाबले बंगालमें या किसी दूसरे राज्यमें अस्पृश्यताका रूप भिन्न हो सकता है, पर हरिजनोंकी स्थिति आर्थिक या सामाजिक किसी भी पहलूसे हो, अपेक्षाकृत काफी पिछड़ी हुअी है अिसमें सन्देह नहीं। वह मात्रामें कुछ कम हो सकती है, पर यह कहना और मानना सही नहीं है कि वहां अस्पृश्यताकी अब वैसी समस्या नहीं रही। बड़े-बड़े शहरोंकी बात छोड़ दीजिये, किन्तु ग्रामोंमें से अस्पृश्यता अभी कहां गअी है? मेरा विश्वास है कि खुद हरिजनोंका और जिन्होंने अपने जीवनके बड़े हिस्सेको अस्पृश्यतानिवारणके काममें ही खर्च किया है, अुन प्रेक्षकोंका मत अिस मान्यतासे निश्चय ही भिन्न है।

जगतमें मूलतः दुःख था, है और रहेगा; दुःखकी समस्या थी, है और रहेगी। किन्तु अुसे पहचाना था सही दृष्टिसे भगवान बुद्धने। जिस रूपमें दुःखका प्रश्न, अुसका निरोध और निरोधका मार्ग बुद्धके सामने आया था, अुसका पता अुसी रूपमें दूसरोंको नहीं था। हममें से अिसी प्रकार आज जो अपने धंधोंमें फंसे पड़े हैं अुन्हें दूसरोंकी समस्याओंका पता न चलना स्वाभाविक हो सकता है। गांधीजीको, ठीक बुद्धकी तरह, अस्पृश्यताका शल्य चुभा और अुसे निकाल फेंकनेका मार्ग भी अुन्होंने शोध निकाला। अुनकी दृष्टिमें वह विशुद्ध धर्म-संशोधनका प्रश्न था। ठक्कर बापाने भी अुसी मार्गको पकड़ा और देशके अनेक लोक-सेवकोंने भी अपने जीवन-रससे सूखते हुअे धर्मवृक्षको फिरसे हरा किया।

जो सचमुचमें समझते हों कि किसी न किसी रूपमें हरिजनोंकी समस्या आज भी ग्रामोंमें और कुछ-कुछ शहरोंमें भी है, अैसे लोकसेवक शास्त्रीय या कानूनी वादविवादमें न अुतरकर धर्म-संशोधनके अिस महान कार्यमें अपने आपको लगा दें, खपा दें। अस्पृश्यताका अन्त अुनकी जीवन-साधनासे ही होगा।

वियोगी हरि

महिलाश्रम, वर्धा

नया सत्र २१ जून, १९५१ से प्रारम्भ होगा। संस्थाकी पाठ्य-पद्धति और पाठ्यक्रम नअी तालीम (बुनियादी शिक्षा) के सिद्धांतोंके अनुसार रहेंगे। संपूर्ण गृह-विज्ञान (कताअी, बुनाअी और घरेलू बागवानी समेत) के समवायसे सारी शिक्षा दी जायगी। माध्यम हिन्दी रहेगा। प्रवेश ११ से १५ सालकी सिर्फ अुन्हीं छात्राओंको मिलेगा जिन्होंने अपनी मातृभाषामें कमसे कम चार कक्षाओंकी (प्राथमिक या बेसिक) पढ़ाअी पूरी की हो। अधिक जानकारीके लिअे पांच आनेके टिकट भेजकर 'आचार्य महिलाश्रम, वर्धा, म० प्र०' के पते पर पत्र-व्यवहार कीजिये।

आचार्य
महिलाश्रम, वर्धा

विषय-सूची

		पृष्ठ
सर्व धर्मोंके लिअे समान आदर	राजेन्द्रप्रसाद	९७
"व्यवहार शुद्धि मंडल"	केदारनाथ	९७
विनोबाकी पैदल यात्रा – ८	दा० मूं०	९८
धर्म-निरपेक्ष राज्यकी व्याख्या	कि० घ० मशरूवाला	१००
शुद्ध व्यवहार आन्दोलन	श्रीकृष्णदास जाजू	१०१
सत्यकी खातिर	सुरेश रामभाअी	१०२
अस्पृश्यताकी समस्या क्या अब है ही नहीं?	वियोगी हरि	१०४
टिप्पणियां:		
वस्त्र-संकटके लिअे अुपाय	रघुनाथप्रसाद यादव	९९
हिन्दी, मराठी, गुजराती, शीघ्रलिपि वर्ग		९९
स्वेच्छासे गोमांस-त्याग	टी० विजयराघवाचार्य	१०३
महिलाश्रम, वर्धा		१०४

www.vinoba.in